जल्दी करो, सुस्तराम

क्रास्बी

जल्दी करो, सुस्तराम

क्रास्बी

“आओ, अब,” मिसिज़ माउस ने कहा,
“हम नानी को मिलने जा रहे हैं ज़रा.”
लूसी ने पहन ली अपनी हैट.
साइमन माउस ले आया अपना कोट.
साइमन बोला, “लूसी, तुम ने
उलटी पहनी है अपनी हैट.”

लूसी ने हैट हल्के से थपथपाई .
“ऐसा नहीं है,” बोली लूसी.
“ऐसा ही है,” बोला साइमन.
“नहीं है,” बोली लूसी.
“ऐसा है,”बोला साइमन.
“नहीं,” बोली लूसी.
“है,” बोला साइमन.
“बच्चो,” बोलीं मिसिज़ माउस.
“साइमन, अपना कोट पहनो.”
“हाँ,” बोली लूसी.
“साइमन, अपना कोट पहनो.”
मिसिज़ माउस बोलीं,
“हमें देर नहीं करनी चाहिये.”
“नहीं,” लूसी बोली,
“हमें देर नहीं करनी चाहिये”
“मैं आ रहा हूँ,” साइमन बोला.

लूसी बोली, “चलो, जल्दी करो,
तुम बड़े सुस्तराम हो.”

“मैं नहीं हूँ,” बोला साइमन.
“तुम हो,” बोली लूसी.
“नहीं हूँ,” बोला साइमन.
“हो,” बोली लूसी.
“नहीं,” बोला साइमन.
“बच्चो,” बोलीं मिसिज़ माउस.

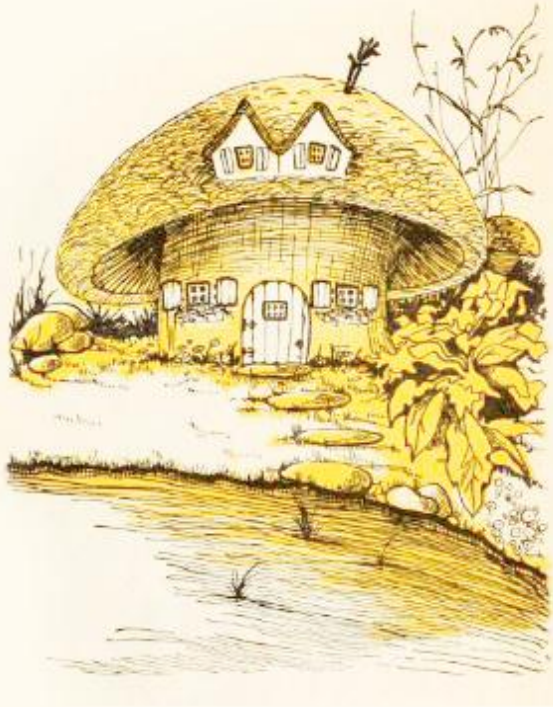

नानी का घर था दूर,
तालाब के दूसरी तरफ, बहुत दूर.
और तालाब भी था बहुत बड़ा.
तालाब के किनारे-किनारे ही चलना था.

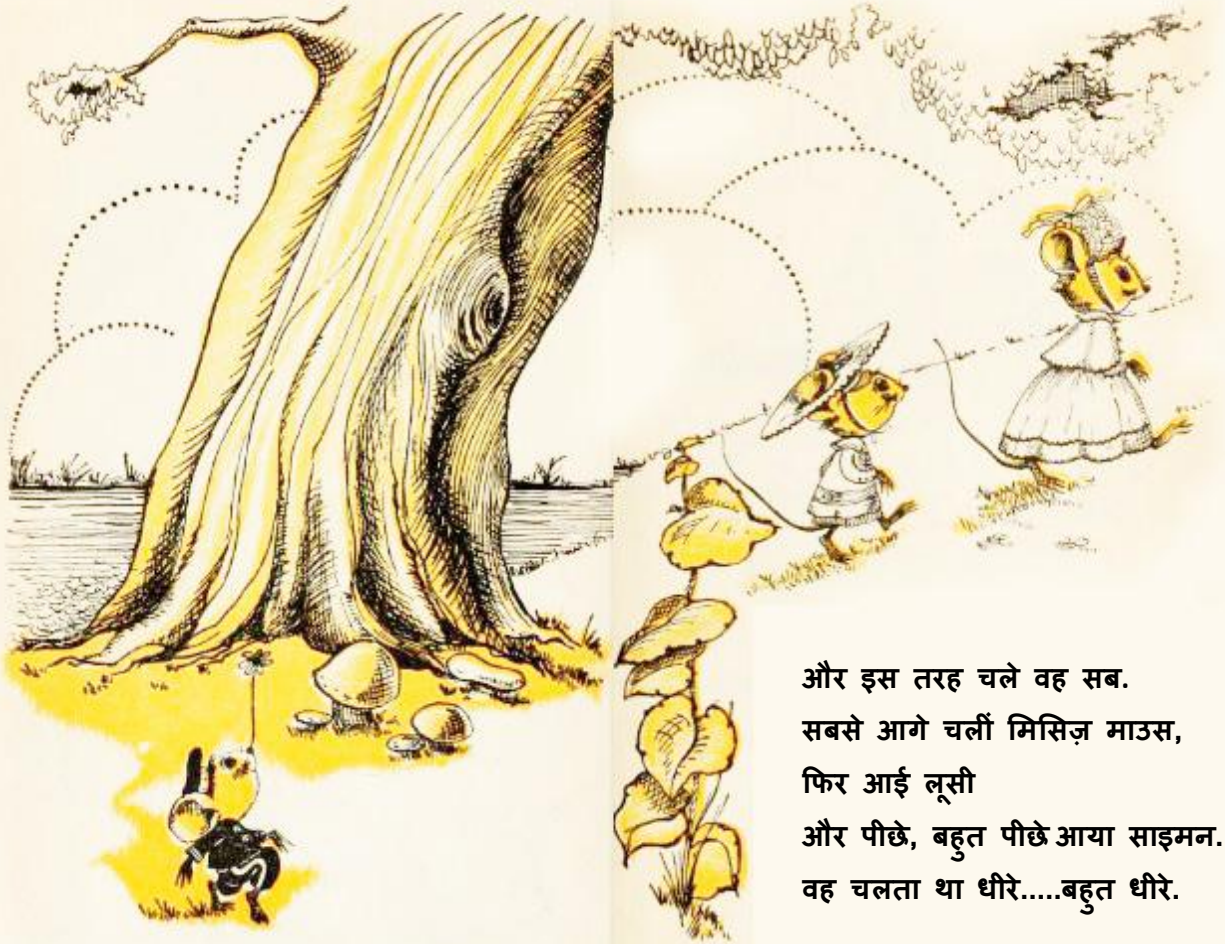

और इस तरह चले वह सब.
सबसे आगे चलीं मिसिज़ माउस,
फिर आई लूसी
और पीछे, बहुत पीछे आया साइमन.
वह चलता था धीरे.....बहुत धीरे.

तालाब में रहती थी मिसिज़ फ्रॉग.
“शुभ दिवस, मिसिज़ फ्रॉग,”
कहा मिसिज़ माउस ने.
“बच्चों, ‘शुभ दिवस,’ बोलो.”
लूसी बोली,
“शुभ दिवस, मिसिज़ फ्रॉग,”
लेकिन साइमन कहाँ था?

सबको करना पड़ा इंतज़ार ....
और इंतज़ार.....
और इंतज़ार.
“जल्दी करो, साइमन,”
चिल्लायीं मिसिज़ माउस.
“यहाँ आओ और मिसिज़ फ्रॉग को
‘शुभ दिवस’ कहो,”

आखिरकार साइमन आया.
“शुभ दिवस, मिसिज़ फ्रॉग,” उसने कहा.
“आपका दिन भी शुभ हो,” मिसिज़ फ्रॉग बोलीं.
“अब हमें चलना चाहिए,”
मिसिज़ माउस ने कहा.

“हमें बहुत दूर है जाना.
चलो, लूसी. जल्दी करो, साइमन.”
“हाँ,” बोली लूसी, “जल्दी करो, साइमन.”
“मैं आ रहा हूँ,” बोला साइमन.
पर वह तालाब के पास ही रहा खड़ा.

“साइमन, तुम्हारी पूंछ तालाब के अंदर है,”
मिसिज़ फ्रॉग ने कहा.
साइमन एक कदम पीछे हटा.
“जल्दी करो, साइमन,”
मिसिज़ माउस चिल्लायीं.
“हाँ,” बोली लूसी.
“जल्दी करो, साइमन,”

“सचमुच,” बोलीं मिसिज़ माउस.
“जल्दी करो, साइमन,”
“मैं आ रहा हूँ,” बोला साइमन.
फिर उसने मिसिज़ फ्रॉग को अलविदा कहा.
वह चलता था धीरे.....बहुत धीरे.
लेकिन अब उसकी पूंछ थी गीली

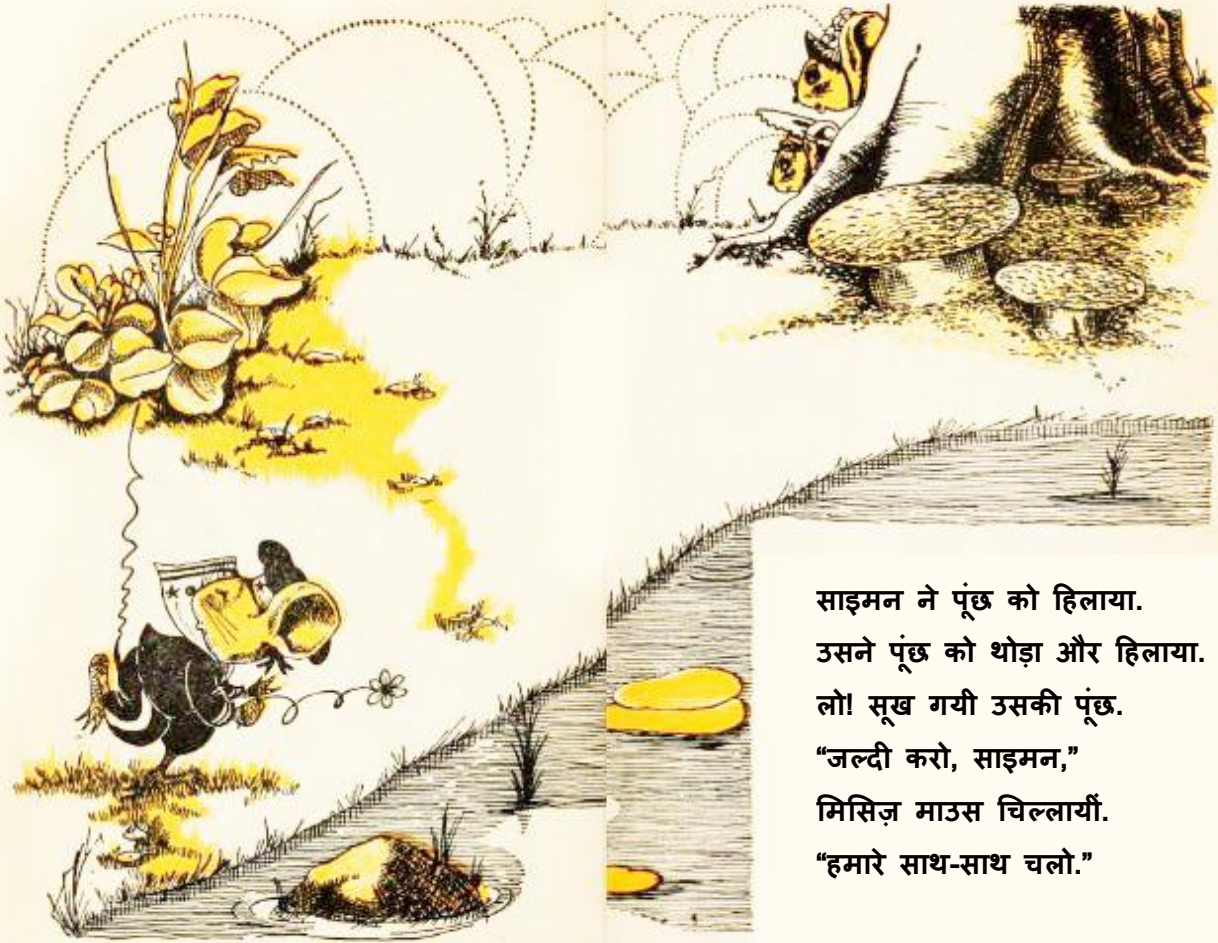

साइमन ने पूंछ को हिलाया.
उसने पूंछ को थोड़ा और हिलाया.
लो! सूख गयी उसकी पूंछ.
“जल्दी करो, साइमन,”
मिसिज़ माउस चिल्लायीं.
“हमारे साथ-साथ चलो.”

‘हाँ,’ बोली लूसी, “हमारे साथ-साथ चलो.
तुम तो गाय की पूंछ हो.”
“मैं गाय की पूंछ नहीं हूँ,” साइमन ने कहा.
“तुम हो,” बोली लूसी.
“नहीं हूँ,” बोला साइमन.
“हो,” बोली लूसी.
“नहीं,” बोला साइमन.
“बच्चो,” बोलीं मिसिज़ माउस.

वह चलते गये
तालाब के किनारे-किनारे-
मिसिज़ माउस,
लूसी,
और बहुत पीछे
आया साइमन.
वह चलता था धीरे.....बहुत धीरे.
धम!

साइमन का पाँव टकराया.
“आउ,” साइमन बोला.
तब एक कछुए ने कहा,
“तुम ने ‘आउ’ क्यों कहा?
तुम ने ही अपना पाँव मुझे मारा!”
साइमन बोला, “मैं थोड़ा जल्दी में था.”
“जल्दी में!” बोला कछुआ.
“तुम तो हो मुझ से भी धीमे.
मैं तो बस जा रहा था तुम से आगे”
“ओह,” साइमन बोला.
“तब तो मुझे चलना होगा जल्दी से तेज़.”
“मुझे भी यही लगता है,” कछुआ बोला.
लेकिन खड़ा रहा वहां साइमन.
“आप मेरी पूंछ पर बैठे हैं,”
बोला साइमन.

“उफ़!” कछुआ बोला
और वह लगा चलने.
धीरे....
धीरे....
धीरे.

आखिरकार वह साइमन की पूंछ से हटा.
साइमन ने कछुए को अलविदा कहा.

लेकिन अब कहाँ थी उसकी माँ?
और कहाँ थी उसकी बहन?
साइमन को दिखाई न दीं वह दोनों.
उन्होंने कहा था उसे जल्दी करनी चाहिए.
उन्होंने कहा था उसे देर नहीं करनी चाहिए.

उसने जल्दी न की थी.
और अब उसे बहुत देर हो गयी थी.
वह सुस्तराम था.
वह गाय की पूंछ था.
तालाब के किनारे-किनारे
वह चलने लगा.

यह क्या था?
यह हैट जैसी लग रही थी.
यह हैट ही थी.
यह लूसी की हैट थी.
लूसी ने हैट खो दी थी!
“मैंने उसे कहा था कि हैट
उलटी थी,” साइमन बोला.
उसने हैट को देखा.
यह तो छोटी नाव सी लग रही थी.

अब बहुत देर हो चुकी थी.
माँ और बहन को ढूँढने में
बहुत देर हो चुकी थी.
नानी के पास जाने में
बहुत देर हो चुकी थी.
बहुत देर.
तब साइमन को कुछ दिखाई दिया
तालाब पर.

साइमन ने एक पाँव रखा अंदर.
साइमन ने दो पाँव रखे अंदर.
फिर वह बैठ गया हैट के अंदर.
और हैट लगी चलने पानी पर.

“मैं नाव चला रहा हूँ,” साइमन चिल्लाया.
“मैं नाव में यात्रा कर रहा हूँ, वाह!”
सूरज चमक रहा था
और आकाश नीला था.
हैट में बैठा साइमन
तालाब में उसे नाव सा चला रहा था.

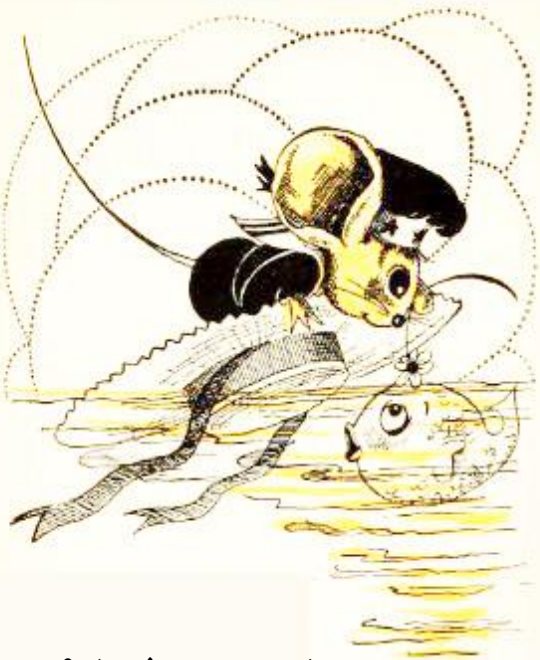

पानी के अंदर साइमन ने
एक मछली को देखा.
मछली ने ऊपर साइमन को देखा.
मछली बोली, “जल्दी करो, साइमन.”
“अब बहुत देर हो चुकी है,” बोला साइमन.
“हैट को थाम लो और मेरे साथ चलो.

मैं नाव में यात्रा कर रहा हूँ, वाह!”
और साइमन नाव चलाता रहा.
लेकिन अब वहां थे दो-
साइमन
और पानी के अंदर मछली.

साइमन ने पानी पर देखी एक बत्तख.
बत्तख ने कहा, “जल्दी करो, साइमन.”
“अब बहुत देर हो चुकी है,” बोला साइमन.
“अंदर कूदो और हमारे साथ चलो.
मैं नाव में यात्रा कर रहा हूँ, वाह!”

और साइमन नाव चलाता रहा.
लेकिन अब वहां थे तीन-
साइमन,
मछली,
और पानी पर बत्तख.

साइमन ने ऊपर एक पक्षी देखा.
पक्षी नीचे आया
और उसके पास बैठ गया.
पक्षी बोला, “जल्दी करो, साइमन.”
“अब बहुत देर हो चुकी है,” बोला साइमन.
“मैं नाव में यात्रा कर रहा हूँ, वाह!
आ जाओ तुम भी.”
और साइमन नाव चलाता रहा.
लेकिन अब वहां थे चार-
साइमन,
मछली,
बत्तख,
और पानी के ऊपर पक्षी.

वह तालाब में चलते रहे, चलते रहे.
फिर साइमन ने कहा,
“ओह, लूसी खा जायेगी
सारा केक.
लूसी पी जायेगी सारा शरबत.
लूसी खूब करेगी मस्ती
नानी के घर.
सिर्फ इसलिए कि वह वहां है
और मैं नहीं हूँ.”
“ओह!” बोली मछली.
“दुर्भाग्य!” बोली बत्तख.
“उफ़!” बोला पक्षी.

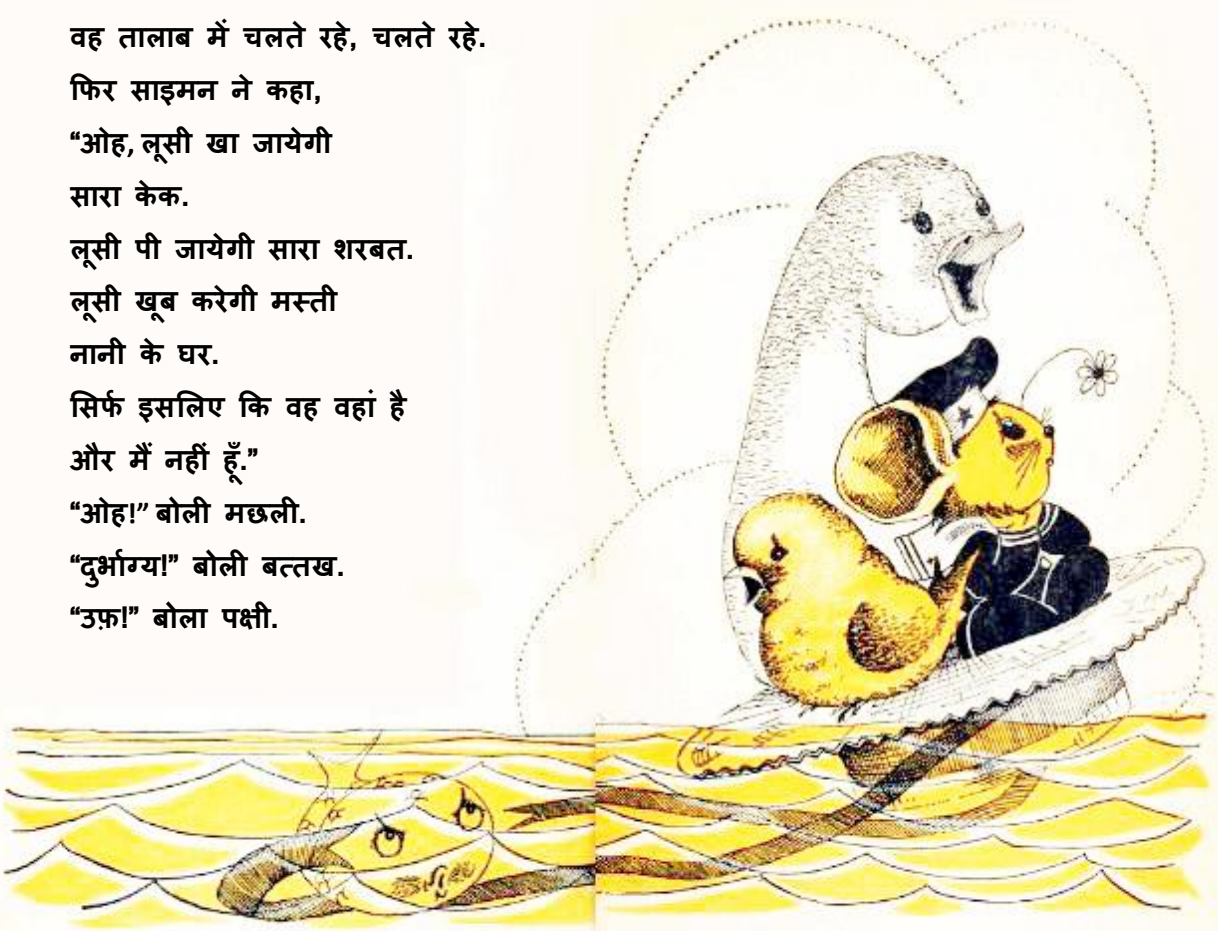

“मैं क्या करूं?” बोला साइमन.
“तुम जल्दी कर सकते हो, साइमन,”
बोली मछली.
“हाँ, जल्दी करो, साइमन,”
बोली बत्तख.
“जल्दी करो, साइमन,”
बोला पक्षी.

“लेकिन कैसे?” पूछा साइमन ने.
“मैं धक्का दूंगी अपने पर से,”
कहा मछली ने.
“मैं धक्का दूंगा अपनी चोंच से,”
कहा बत्तख ने.
“मैं धक्का दूंगा अपने पाँव से,”
कहा पक्षी ने.

तब सब ने लगाया धक्का मिलकर,
हैट लगी चलने तेज़ी से पानी पर,
और तेज़,
नीचे और ऊपर,
ऊपर पानी पर.

फिर – धम!
तालाब के दूसरे किनारे से
हैट जा टकराई.
साइमन बाहर आया, बहुत....धीरे.
“अलविदा,” पानी के अंदर से
मछली बोली.
‘अलविदा,” पानी पर तैरती
बत्तख बोली.
“अलविदा,” पानी के ऊपर उड़ता
पक्षी बोला.
और साइमन था अब वहां अकेला.

वह न जानता था कि वह था कहाँ.
वह न जानता था कि
उसकी माँ थीं कहाँ,
वह न जानता था कि
उसकी बहन थी कहां

साइमन ने टोपी उठाई.
उसने टोपी थोड़ी थपथपाई.
साइमन चल पड़ा.
धीरे.....बहुत धीरे.

फिर वह रुका.
वह क्या था सूँघ रहा?
उसकी नाक ने बताया,
नानी ने था एक केक बनाया.

नानी का घर था दूर,
तालाब के दूसरी तरफ, बहुत दूर.
और साइमन नाव चला कर
पहुंचा था
तालाब के दूसरी ओर.
बहुत, बहुत दूर,
तालाब के दूसरी ओर.
वहां जहां था नानी का घर
एक पहाड़ी के ऊपर.

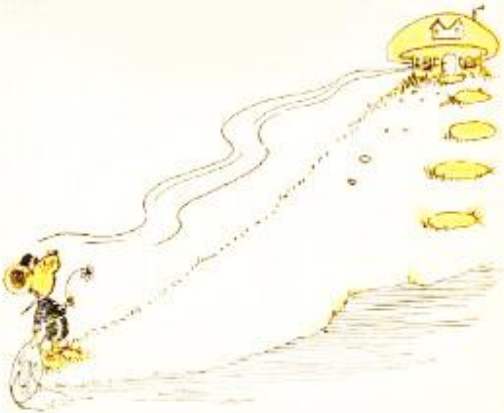

“नानी.” साइमन चिल्लाया.
“मेरे लिये रखना कुछ बचाकर!
मैं आया! मैं आया!”
नानी खड़ी थी दरवाज़े पर.
“क्यों साइमन,” बोली नानी,
“तुम पहुंचे इतनी जल्दी कैसे पर?
कहाँ है लूसी?
और कहाँ है तुम्हारी माँ?”
“मैं नहीं जानता,” बोला साइमन.
“बोलीं थीं मुझ से दोनों वो,
जल्दी करो, जल्दी करो.”
“अच्छा,” बोली नानी,
“केक खा लो थोड़ा सा.
और हम करेंगे इंतज़ार उनका.”
साइमन ने खाये केक के टुकड़े पाँच.

फिर मिसिज़ माउस और लूसी
आये पहाड़ी के ऊपर नानी के घर.
“क्यों, साइमन,” बोलीं मिसिज़ माउस,
“कैसे पहुंचे तुम यहाँ हम से पहले?”
“हाँ, साइमन,” बोली लूसी,
“कैसे पहुंचे तुम यहाँ हम से पहले?”
साइमन कुछ न बोला.
बस आगे कर दी लूसी की हैट.

“मेरी हैट !” चिल्लाई लूसी.
“हमने ढूंढा इसे और ढूंढा बहुत .
तुम खोज लाये, कितने अच्छे हो तुम.”
“ओह, अच्छा,” बोला साइमन.
“यह है मेरी सबसे अच्छी हैट,” बोली लूसी.
“ठीक है,” बोला साइमन.

“सच में, उलटी पहनी थी मैंने हैट,”
बोली लूसी.
“जो बुरी बातें मैंने कहीं थीं तब,
वापस लेती हूँ मैं वह सब.”
साइमन बोला, “जो बुरी बातें मैंने कहीं थीं
तब, वापस लेता हूँ मैं वह सब.”

“नहीं, तुमसे पहले मैंने कहा,”
बोली लूसी.
“तुमने नहीं कहा,” बोला साइमन.
“मैंने कहा,” बोली लूसी.
“नहीं कहा,” बोला साइमन.
“कहा,” बोली लूसी.
“नहीं,”बोला साइमन.
“बच्चो,” बोलीं मिसिज़ माउस.

नानी बोलीं,” रुको,सुनो
सब के लिए है केक और शर्बत.
आओ सब और ले लो झटपट.”
“हाँ,” बोला साइमन,
“आओ सब और ले लो झटपट.”

“जल्दी करो, माँ,” बोला साइमन.
“जल्दी करो, लूसी,” बोला साइमन.
मिसिज़ माउस ने देखा नानी को.
वह बोलीं, “ देखो, अब कौन कह रहा है
‘जल्दी करो’.”

अंत